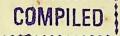




18/1N



228

14 166 P

में विश्व में भा वा निष्णित

ा श्रोश्म ॥

गुरुकुल पद्धतिः

गुरुकुल पंत्रालय कांङ्गड़ी में

श्री लाला नन्दलाल जी द्वारा

सुद्रित तथा प्रकाशित

सं० १६७०

HI 1913.

भथम संस्करण

३०० मति

224,85 14166A # स्रोइम् 🛪

228/24 पुस्तक की खंख्या पुरतकालय-पिंडजका-इंख्या 166 षुस्तक पर सर्व प्रकार की निशानियां लगाना वर्जित है।

कोई महाशय १९ दिन से अधिक देर तक पुस्तक अपने पास नहीं रख सकता। अधिक देर तक रखने के लिये

पुनः आज्ञा माप्त करनी चाहिये।

टि स्य

लि

तद

॥ औ इम् ॥

श्रावणी की विधि

प्रथम संस्कारविधि में लिखी हुई रीतियों से अपि स्थापना-दि करके, आधार और आज्य भागों को देकर, (१) ब्रह्मणे स्थाहा (२) छन्दोभ्यः स्वाहा ये दो आहुतियें देकर, निक्र लिखित घी की दश आहुतियें दे।

(१) सावित्रये खाहा (२) ब्रह्मणे खाहा (३) श्रद्धाये स्वाहा (४) मेथाये स्वाहा (५) प्रज्ञाये खाहा (६) भारणाये स्हाहा (७) सदसस्पतये खाहा (८) श्रद्धापतये स्वाहा (६) ब्रन्दोभ्यः स्वाहा (१०) श्रष्टिभ्यः स्वाहा ।

तदनन्तर निम्न लिस्तित ऋग्वेद की ११ ऋचाओं से अहुति दें।

अग्निमीले पुरोहितँ युज्ञस्यं देवमृत्वि-जम् । हीतारं रब्धातंमम् ॥१

कुषुम्भुकस्तदब्रवीद्यिषः प्रंवर्तमानुकः । वृद्धिकस्यार्सं विषमंरसं वृद्धिक ते विषम्॥२ आवद्रस्त्रं शंकुने भुद्रमा वंद तृष्णीमा-सीनः सुमृतिं चिकिद्धि नः। यद्यत्पत्नवदंसिः कर्करियं था एहदूंदेम विदये सुवीराः॥ ३ रणाना ज्यदंशिना योनावृतस्यं सीदतम्। पातं सोमंमृतावृधा ॥ १
धामंन्ते विश्वं भुवंनमधि शितमन्तः
समुद्रे हचन्तरायुषि। अपामनीके सिमये
य आभृत्स्तमश्याम् मधुमन्तं त अभिम्। ५
गन्तांनो यज्ञं यश्चियाः सुशाम श्रोता हधमरक्ष एवयामंस्त्। ज्येष्ठासो न पर्यंतासो व्योमनि युयँ तस्यं प्रचेतसः स्यात
दुर्धतेवोनिदः ॥ ६

यो नः स्वो अरणी यश्च निष्टणे जिघां -सति । देवाहतँ सर्वे धूर्धन्तु ब्रह्म वर्म ममान्तरम् ॥ ७

से

करे

4

कर

र्षे ।

प्रति चक्ष्व वि चक्ष्वेन्द्रश्च सीम जागृतम्। रक्षोभ्यो वधम्य तमशनिं यातुमद्वयः॥ ऋ॰ म॰ ७ अंतिम.मंत्र॥ ८

आग्ने याहि मरुत्सखा रुद्रे भिः सोमपीतये। सोमया उप सुष्ठुतिं मादयस्य स्वर्णे ॥ ॥ ९ यत्तं राजच्छ्वतं हविस्तेन सोमाभि रक्ष नः। अरातीवा मा नस्तारीन्मो च नः किँचना-ममुदिन्द्रायेन्दो परि खव॥१०

समानी व् आकृतिः समाना हृदयानि वः । समानम्दु वो मनो यथा वःसुसहासति ॥११ इस के पथात् यजुर्वेद के इस मन्त्र सेः—

सदसस्पतिमद्भुतं प्रियमिन्द्रस्य काम्यम् । सनि मेधामयासिष्धं स्वाहा ॥ यजुर्वेद अ॰ ३२ मॅ॰ १३

आचार्य इवन करें, किन्तु मन्त्र सय बोर्लें। १ पश्चात् समस्त * विद्यार्थी पलाश की तीन २ इरी समिधाओं को घी से भिगोकर सावित्री मन्त्र से आहुति दें। इस प्रकार तीन वार करें। २ पुनः "स्विष्टकृत्" आहुति देकर प्रातराश किया जावे।

"श्रन्नोमित्रः" इस धन्त्र को पढ़कर, उस के पश्चात् मुखधी-कर, आचमन करके, अपने २ आसनों पर बैठकर, जल पात्रों में कुशाओं को रखकर, हाथ जोड़कर, ग्रुरु के साथ तीन वार

अधिगयों के कान्तिक, सर्व विद्यार्थियों से समिधा बोकर ढाल दें। श्रोद्वारध्याहतिपूर्वक सावित्री पढ़कर वेदों के निम्न लिखित

ऋग्बेदः--

अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजं । होतारं रमधातमम् ।

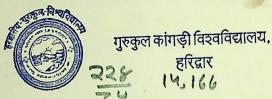
समानी व आकृतिः समाना हृद्यानिवः । समानमसु वो मनो यथा वः सुसहासति ॥ यजुर्वेदः—

॥ ओश्म ॥ इषे त्वोर्ज त्वा वायव-स्य देवो वः सविता प्राप्यतु श्रेष्टतमायु कर्मणु आण्यायध्वमघ्न्या इन्द्रोय भागं प्रजावतीरनमोवा अयक्ष्मा मा वस्तेन ईशत माध्याध्य सो ध्रुवा अस्मिन् गोपती स्यात वहीर्य जमानस्य पश्चनपाहि॥हिरण्मयेन पात्रे-ण सत्यस्यापिहितं मुखम् । योऽसावादित्ये पुरुषः सोऽसावहम् । ओश्म् खँ ब्रह्म ॥ सामवेदः—

अग्नआयाहि वीतये गृणानीहव्यदात्ये नि होता सत्सि चहिषि। मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः परावत आ जगन्था परस्याः। सृकं संशाय पवि-मिन्द्र तिग्मं विशत्रून्तािं विमुधो नुदस्व॥ भद्रं कर्णभिः ष्रृणुयाम देवा भद्रं पश्ये माक्ष-भिर्यजत्राः। स्थिरैरंगैस्तुष्ट्वांसस्तनूभिर्व्यं --शेमहि देवहितं यदायुः॥ स्वस्ति न इन्द्रो मृहुश्रूवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्व-स्ति नस्ताक्ष्यीअरिष्टनेमिः स्वति नो बृहस्प-तिर्दधातु॥ स्वति नो वृहस्पतिर्द्धधातु॥ अथर्ववेदः—

ओ अस् शन्तो देवीर भिष्ठय आपो भवन्तु पीतये। शंयोर भिष्ठवन्तु नः॥
पनाय्यं तदिष्ठाना कृतं वां वृषभो दि
वो रजसः एधिव्याः। सहस्त्र शंसा उत् ये गविष्ठी सर्वां इत् तां उप याता पिवध्ये॥
पश्चात् यह मन्त्र पढ़।

सहनोऽस्त सहनोऽवतु, सह न इदं वीर्ग्यं वद-स्तु। ब्रह्माइन्द्रस्तद् वेद् येन यथान विद्विषामहे॥ इस वेद मन्त्र को पढ़कर सामवेद का वामदेव्यगान करें। गुरुकुल यन्त्रालय काङ्गड़ी।



पुस्तक लौटाने की तिथि ग्रन्त में ग्रिङ्कित है। इस तिथि को पुस्तक न लौटाने पर छै द्वानये पैसे प्रति पुस्तक ग्रितिरिक्त दिनों का ग्रिथंदण्ड लगेगा।

134.3.00009



C-0. Gurukul Kangri University Haridwar Calcotion. Digitized by S3 Foundation HS &

Entered in Catabase